(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

*सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद् -9/947, के सातत्य में शैक्षिक सत्र **2020-21** के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक*

संस्कृत

कक्षा-9

सम्पादक

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच०डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

डॉ०योगेन्द्र नारायण पाण्डेय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत),
बी० एड०, पी-एच०डी०
स्नातकोत्तर (शिक्षा प्रशासन) वरिष्ठ प्रवक्ता
महगाँव इण्टर कॉलेज
महगाँव, कौशाम्बी

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार **कक्षा ९** के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत विषय की अनिवार्य पाठ्य-पुस्तक– **'संस्कृत गद्य भारती'**, **'संस्कृत पद्य पीयूषम्'**, **'संस्कृत कथा नाटक कौमुदी'** एवं **'संस्कृत व्याकरण'** निर्धारित है। इनके समन्वित रूप को एक पुस्तक का स्वरूप दिया गया है। इसे तैयार करते समय हमारा ध्यान सबसे अधिक इस ओर रहा है कि पाठ्य-सामग्री विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल, सुरुचिपूर्ण एवं प्रेरक हो। इस पाठ्य-पुस्तक में कई ऐसे महत्त्वपूर्ण पाठों का संकलन किया गया है, जो विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण एवं ज्ञानार्जन में सहायक सिद्ध होंगे। **'अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि'**, **'पर्यावरण शुद्धिः'** एवं **'अन्तरिक्षं विज्ञानम्'** आदि पाठ अत्यन्त ज्ञानवर्धक हैं। इसके अतिरिक्त **'रामस्य पितृभक्तिः'** से पिता के प्रति समर्पण की भावना, **'सुभाषितानि'** से सही आचरण की शिक्षा, **'भारतदेशः'** से देश की महिमा, **'नारी-महिमा'** से नारी का समाज में सम्माननीय स्थान, **'नीति-नवनीतम्'** से लोक कल्याण की भावना, **'आरोग्य साधनानि'** से कायचिकित्सा सम्बन्धी यम-नियम-व्यायाम आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

'कथा नाटक कौमुदी' के अन्तर्गत चार चर्चित नाटकों का समावेश है। ये हैं–**'गार्गी-याज्ञवल्क्य संवादः'**, **'वत्सराज निग्रहः'**, **'न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्'** और **'शकुन्तलायाः पतिगृह गमनम्'**। पाठ्यक्रम में नाटकों के समावेश का उद्देश्य है–विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करना। चारों नाटक रुचिकर एवं बोधगम्य हैं, जिससे विद्यार्थी सरलता से पाठ्यवस्तु को ग्रहण कर सकें। संस्कृत व्याकरण से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री का भी समावेश किया गया है। इन पाठों के अध्ययन से विद्यार्थियों को नयी दिशा प्राप्त होगी, ऐसा हमारा प्रयास एवं विश्वास है।

यद्यपि पाठ्य-पुस्तक में सभी आवश्यक तथ्यों को समाहित करने का प्रयास किया गया है, तथापि रचनात्मक सुझावों के प्रति हम आपके आभारी होंगे।

• सम्पादक एवं प्रकाशक

विषय-सूची

|| खण्ड-क (गद्य, पद्य तथा आशुपाठ) ||

संस्कृत गद्य भारती

●	**संस्कृत गद्य साहित्य का विकास**	....	6
●	माङ्गलिकम्	....	8
प्रथमः पाठः	अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि	....	10
द्वितीयः पाठः	आदिकविः वाल्मीकिः	....	13
तृतीयः पाठः	बन्धुत्वस्य सन्देष्टा रविदासः	....	16
चतुर्थः पाठः	आजादः चन्द्रशेखरः	....	19
पञ्चमः पाठः	भारतवर्षम्	....	23
षष्ठः पाठः	परमवीरः अब्दुलहमीदः	....	28
सप्तमः पाठः	पुण्यसलिला गङ्गा	....	31
अष्टमः पाठः	पर्यावरणशुद्धिः	....	35
नवमः पाठः	अन्तरिक्षं विज्ञानम्	....	39
दशमः पाठः	भारतीय संविधानस्य निर्माता डॉ० भीमराव अम्बेडकरः	....	42

संस्कृत पद्य पीयूषम्

●	मङ्गलाचरणम्	....	45
प्रथमः पाठः	– रामस्य पितृभक्तिः	....	47
द्वितीयः पाठः	– सुभाषितानि	....	50
तृतीयः पाठः	– अन्योक्ति-मौक्तिकानि	....	52
चतुर्थः पाठः	– भारतदेशः	....	55
पञ्चमः पाठः	– नारी-महिमा	....	57
षष्ठः पाठः	– क्रियाकारक-कुतूहलम्	....	59
सप्तमः पाठः	– नीति-नवनीतम्	....	62
अष्टमः पाठः	– यक्ष-युधिष्ठिर-संलापः	....	65

नवमः पाठः	– आरोग्य-साधनानि	....	**67**
परिशिष्ट	– टिप्पणियाँ	....	**70**
	– (अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी में अर्थ)		

संस्कृत कथा नाटक कौमुदी

प्रथमः पाठः	गार्गी-याज्ञवल्क्यसंवाद:	....	**90**
द्वितीयः पाठः	वत्सराजनिग्रह:	....	**93**
तृतीयः पाठः	न गङ्गदत्त: पुनरेति कूपम्	....	**97**
चतुर्थः पाठः	शकुन्तलाया: पतिगृह गमनम्	....	**100**

|| खण्ड-ख (व्याकरण, अनुवाद तथा रचना) ||

१.	माहेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण-स्थान	....	**104**
२.	सन्धि	....	**110**
	– (स्वर एवं व्यंजन संधियों का परिचय)		
३.	समास	....	**121**
	– (तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व)		
४.	कारक एवं विभक्ति	....	**127**
५.	अनुवाद	....	**134**
६.	अव्यय एवं उपसर्ग	....	**153**
७.	शब्द-रूप	....	**157**
	– (संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के तीनों लिंगों के रूप)		
८.	धातु-रूप	....	**164**
	– (परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद के धातुओं के रूप)		
९.	संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग	....	**177**
१०.	संस्कृत वाक्य-शुद्धि	....	**184**
११.	पत्र-लेखन	....	**187**
	– (संस्कृत में आवेदन पत्र तथा निमंत्रण-पत्र)		

||खण्ड-क (गद्य, पद्य तथा आशुपाठ ||

संस्कृत गद्य भारती

संस्कृत गद्य साहित्य का विकास

संस्कृत भाषा का प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद पद्यात्मक है। परन्तु गद्य का प्रारम्भिक रूप भी हमें वैदिक संहिताओं में ही मिलता है। 'ऋक् पादबद्धम्' इस लक्षण के अनुसार पद्यात्मक मन्त्रों का संग्रह ऋग्वेद संहिता है। इसके विपरीत 'अनियताक्षरावसानो यजुः' इस लक्षण के अनुसार शब्दों की सीमा सम्बन्धी नियमों से मुक्त रचना-पद्धति को यजुष् कहा जाता है। इसी का दूसरा नाम 'गद्य' है।

स्पष्ट वचनार्थक गद् धातु में यत् प्रत्यय जोड़ने पर गद्य शब्द बनता है और गत्यर्थक पद् धातु से पद्य शब्द की निष्पत्ति होती है। गति प्रधान होने के कारण पद्य में लय या छन्द का होना आवश्यक माना गया है। गद्य इस लयबद्धता अथवा छन्दों से रहित होता है। इसलिए दण्डी ने 'अपादः पदसन्तानो गद्यम्' यह गद्य का लक्षण किया है। अर्थात् ऐसी शब्द-रचना गद्य कहलाती है जिसमें चरण-विभाजन न हो।

'गद्यं यजुर्मतम्' लक्षण के अनुसार गद्य शैली का प्राचीनतम प्रतिनिधि ग्रन्थ यजुर्वेद है। ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, पुराणों तथा सूत्र ग्रन्थों का गद्य भी प्राचीनतम गद्य शैली का ही अनुकरण है। संस्कृत में वैदिक काल से लेकर लौकिक साहित्य तक गद्य के विकास की अविच्छिन्न परम्परा देखने को मिलती है।

- **वैदिक गद्य**—भारतीय संस्कृति की समस्त मान्यताएँ वैदिक ग्रन्थों में निहित हैं। इन वैदिक ग्रन्थों के अन्तर्गत मन्त्रसंहिताएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, वेदाङ्ग एवं सूत्रग्रन्थों की गणना की गयी है।

  वैदिक गद्य का प्राचीनतम रूप हमें शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताओं में मिलता है। अथर्ववेद में भी गद्यांश प्रचुर मात्रा में मिलता है। इसका १५वाँ और १६वाँ काण्ड गद्यांशयुक्त है।

- **ब्राह्मण ग्रन्थों का गद्य**—ब्राह्मण ग्रन्थों में कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञ प्रक्रिया सम्बन्धी मुख्य तथ्यों पर वैदिक विद्वानों के विचारों का संकलन है। ब्राह्मण ग्रन्थों के पिछले भाग जिनमें कर्मकाण्ड के स्थान पर ज्ञान काण्ड की प्रधानता है, वह आरण्यक कहा जाता है। इन ग्रन्थों में विषय प्रतिपादन के लिए दिये गये आख्यानों के वर्णनपरक प्रसंगों में संवादों का-सा आनन्द मिलता है। साथ ही छोटे-छोटे समासरहित पदोंवाले वाक्यों के प्रयोग तथा 'ह', 'वै', 'उ' आदि अव्ययों का वाक्यालङ्कार के रूप में प्रयोग के कारण गद्य की रोचकता तथा सुन्दरता का भी अनुभव होता है।

- **उपनिषदों का गद्य**—उपनिषदों में ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के स्वरूप तथा इनके पारस्परिक सम्बन्ध का निरूपण किया गया है। अतः उपनिषदों में ज्ञानमार्ग अर्थात् अविद्या का नाश तथा ब्रह्म की प्राप्ति का उपदेश दिया गया है। इनमें बृहदारण्यक, छान्दोग्य, तैत्तिरीय और कौषीतकी प्रायः गद्य शैली में हैं। उपनिषदों का गद्य ब्राह्मण ग्रन्थों के गद्य के समान सरल एवं सरस है। इनमें सजीवता तथा आडम्बरशून्यता के साथ ही विनोदपूर्णता है। लम्बे समासों का अभाव, क्रियापदों की प्रचुरता और पदों की सुन्दर पुनरुक्ति होने के कारण उपनिषदों का गद्य अपेक्षाकृत सरल एवं आकर्षक है।

- **पौराणिक गद्य**—यद्यपि पुराणों का अधिकांश भाग पद्यमय है परन्तु महाभारत, विष्णुपुराण और भागवत पुराण आदि में यत्र-तत्र गद्य का भी प्रयोग हुआ है। इन पौराणिक गद्यों में भी वैदिक गद्यों के समान लघु समासों का प्रयोग किया गया है। इनमें आर्ष प्रयोग भी मिलते हैं। भाषा का स्वाभाविक प्रवाह भी इनमें विद्यमान है। पौराणिक गद्यों में लौकिक ललित गद्यों के समान प्रसादगुण, आलंकारिकता और प्रौढ़ता सभी के दर्शन पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

- **सूत्र ग्रन्थों का गद्य**—वैदिक कर्मकाण्ड की व्याख्या के लिए छह वेदाङ्गों का विकास हुआ, जिनमें वैदिक कर्मकाण्ड से सम्बन्धित वेदाङ्ग 'कल्प' है। कल्प साहित्य दो वर्गों में विभाजित है–(१) श्रौत सूत्र (२) गृह्य सूत्र। सर्वप्रथम इन ग्रन्थों में हमें संक्षिप्त

गद्य शैली के दर्शन होते हैं। संक्षिप्तीकरण की इस प्रवृत्ति के विकास की चरम सीमा पाणिनि की अष्टाध्यायी में दृष्टिगोचर होती है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ को व्यक्त करने का प्रयत्न इस सूत्र-शैली की विशिष्टता है। पाणिनि के सूत्र इस शैली के उत्कृष्टतम उदाहरण कहे जा सकते हैं। भारतीय षड्दर्शनों के मूल ग्रन्थ भी इसी सूत्र-शैली में लिखे गये हैं। यास्क का निरुक्त वैदिक शब्दों के अर्थों को समझने के लिए सूत्र-शैली में लिखा गया सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है।

- **लौकिक गद्य**—सूत्र-शैली के बाद संस्कृत गद्य को 'लौकिक गद्य' माना गया है। रामायण, महाभारत, पुराण, वेदाङ्ग, दर्शन तथा सूत्र ग्रन्थ पर लिखे गये भाष्य तथा अलंकृत शैली की रचनाएँ लौकिक साहित्य के अन्तर्गत मानी जाती हैं। इस साहित्य का अधिकांश भाग पद्यमय है। जो कुछ भी गद्यभाग है उसे दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–शास्त्रीय गद्य एवं साहित्यिक अथवा काव्यात्मक गद्य।

- **शास्त्रीय गद्य**—संक्षिप्त शैली में लिखे होने के कारण कुछ समय पश्चात् सूत्र-ग्रन्थों को समझने में कठिनाई का अनुभव होने लगा। फलस्वरूप भाष्य ग्रन्थों की रचना हुई। इन भाष्यों का गद्य गम्भीर होते हुए भी सुस्पष्ट, सारगर्भित, प्रौढ़ तथा प्राञ्जल है। इनमें प्राय: समासों की दुरूहता का अभाव है। पतञ्जलि, जयन्तभट्ट, शबर स्वामी, शंकराचार्य आदि भाष्यकार बहुत लोकप्रिय हुए। इन भाष्यकारों के पश्चात् अनेक टीकाकारों ने भी गद्य लिखा, किन्तु उनकी शैली में क्लिष्टता और दुरूहता का बाहुल्य दिखता है।

- **साहित्यिक गद्य**—उपलब्ध साहित्य के आधार पर साहित्यिक या काव्यात्मक गद्य-लेखन की परम्परा दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट से प्रारम्भ हुई मानी जाती है। परन्तु इनके आलंकारिक गद्य-काव्यों से इतना तो अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके सम्मुख कुछ पुरातन रचनाएँ रही होंगी, जिनसे उन्हें प्रेरणा मिली होगी। दुर्भाग्य से वैदिकोत्तर युग को साहित्यिक युग से जोड़नेवाली मध्यवर्ती कड़ियाँ अनुपलब्ध हैं। परन्तु रुद्रदामन् (१५० ई०) गिरिनार शिलालेख से स्पष्ट ज्ञात होता है कि संस्कृत गद्य-लेखन की सुमहती परम्परा रही है। इसके विकास के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करनेवाले कवियों में दण्डी, सुबन्धु और बाण का नाम सर्वप्रमुख है।

प्राचीन गद्य-काव्यकार

- **सुबन्धु**—प्राचीन गद्य-काव्यकारों में सुबन्धु की चर्चा सबसे पहले की जाती है। विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर इनका रचनाकाल छठी शताब्दी में सुनिश्चित किया गया है। इनकी एकमात्र कृति 'वासवदत्ता' है। यह एक काल्पनिक कथा है, जिसका सूक्ष्म पौराणिक कथाओं का संकेत करते हुए अतिविस्तार किया गया है। रचनाकार के अनुसार इस प्रबन्ध काव्य के प्रत्येक अक्षर में श्लेष अलंकार है। इसी कारण सुबन्धु की भाषा में क्लिष्टता, कृत्रिमता तथा आडम्बर का आधिक्य है।

- **दण्डी**—दण्डी तीन कृतियों के रचयिता माने गये हैं- दशकुमारचरित, अवन्तिसुन्दरी कथा और काव्यादर्श। विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर दण्डी का समय भी छठी शताब्दी ही माना गया है। अवन्तिसुन्दरी कथा को अनेक विद्वान् दण्डी की रचना नहीं मानते। काव्यादर्श अलंकारशास्त्र का अनूठा ग्रन्थ है। दशकुमारचरित संस्कृत साहित्य की एक अद्वितीय रचना है। इसमें दस राजकुमारों के देश-देशान्तर भ्रमण, विचित्र अनुभव, दु:साहसिक कार्यों का मनोरंजक वर्णन किया गया है। पाञ्चाली रीति के सिद्धहस्त कवि दण्डी का गद्य बड़ा ही चुस्त और सरस है। अर्थ की स्पष्टता, रस की सुन्दर अभिव्यक्ति, सजीव कल्पना और माधुर्य गुणयुक्त शब्दावली दण्डी की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

- **बाणभट्ट**—बाण की दो रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–हर्षचरित और कादम्बरी। इन दोनों ग्रन्थों में बाण ने अपने विषय में सुस्पष्ट जानकारी दी है। इस आधार पर बाण का जन्म वात्स्यायन वंश में हुआ था। बाणभट्ट राजा हर्षवर्धन के राजकवि थे। अत: इनका रचनाकाल ६०६ ई० से ६४८ ई० के मध्य सुनिश्चित किया गया है। काव्यसौन्दर्य, भाव और भाषा का समन्वय, अद्वितीय कल्पनाएँ, सभी रसों का परिपाक, शृंगार के दोनों पक्षों का सजीव चित्रण, मार्मिक विश्लेषण, सुन्दर सुभाषितों का प्रयोग, अलंकारों का सुन्दर प्रयोग और प्रसाद तथा माधुर्य गुण का सम्मिश्रण बाण की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं। गद्य साहित्य में बाण का सर्वोच्च स्थान माना गया है।

संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य स्वल्प संख्या में उपलब्ध होते हैं। उपलब्ध साहित्य के आधार पर दण्डी, सुबन्धु और बाण ही विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। इनके द्वारा रचित क्रमश: दशकुमारचरित, वासवदत्ता और कादम्बरी नामक कृतियाँ संस्कृत गद्यकाव्य की बृहत्त्रयी के रूप में सुविख्यात हैं।

●●●

माङ्गलिकम्

[शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा के अध्याय २२ की कण्डिका २२ से संकलित इस गद्यात्मक मन्त्र में ऋषि-मुनियों द्वारा समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी है। यहाँ तेजस्वी ब्राह्मणों का होना, कुशल व शक्तिशाली क्षत्रियों का होना, दुधारू गायों का होना, तीव्रगामी घोड़ों और समयानुसार आवश्यकता के अनुरूप वर्षा होने की कामना की गयी है। इनके साथ ही अप्राप्त की प्राप्ति की इच्छा भी की गयी है और जो प्राप्त है ईश्वर से उसकी रक्षा करने की प्रार्थना की गयी है। ***मन्त्र का अर्थ है***–*'हे ब्रह्मन्! हमारे राज्य में वेद और ईश्वर के ज्ञाता ब्राह्मण जन्म लें। पराक्रमी शत्रुओं को भी हरानेवाले, बाण-विद्या में निपुण क्षत्रिय उत्पन्न हों। दुधारू गायें, बलशाली बैल, तीव्रगामी घोड़े, रूपवती व गुणवती स्त्रियाँ और सभ्य युवक जन्म लें। समयानुसार वर्षा हो। जो अप्राप्त है वह प्राप्त हो और जो प्राप्त हो ईश्वर उसकी रक्षा करे।']*

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रेराजन्य: शूरइषव्योऽति व्याधी महारथो। जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु: सप्ति: पुरन्ध्रियोंषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्तां योगक्षेमो न: कल्पताम्।

(शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखा अध्याय २२ कण्डिका २२)

● अन्वय:

ब्रह्मन् ! यथा नो राष्ट्रे ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण आ जायताम्। इषव्य: अतिव्याधी महारथ: शूर: राजन्य आ जायताम्। दोग्ध्री धेनु: वोढा अनड्वान्, आशु: सप्ति:, पुरन्ध्रि: योषा, रथेष्ठा जिष्णु:, सभेय: युवा आजायताम्। अस्य यजमानस्य राष्ट्रे वीर: जायताम्। न: निकामे निकामे पर्जन्य: वर्षतु। ओषधय: फलवत्य: न: पच्यन्ताम्। योगक्षेम: न: कल्पताम्।

● व्याकरण

आ जायताम् = वेदों में प्राय: उपसर्ग और क्रिया पद एक साथ न रखे जाकर कुछ पदों के बाद दूर-दूर भी रखे जाते हैं। इस मन्त्र में इनके बीच में ब्रह्मन्, ब्राह्मणो, ब्रह्मवर्चसी शब्द आ गये हैं। **ब्रह्मन्** = बृहति वर्द्धते सम्पन्नं भवतीत्यर्थ इति ब्रह्म तत्सम्बुद्धौ हे ब्रह्मन्! बृहि वृद्धौ मनिन् प्रत्यय। **ब्रह्मवर्चसी** = ब्रह्मवर्च: इव वर्च: यस्य स ब्रह्मवर्चा:, किन्तु आर्ष प्रयोग होने से 'ब्रह्मवर्चसी' प्रयुक्त हुआ है। **इषव्य:** = इषौ कुशल:। **अतिव्याधी** = अत्यन्तं विध्यतीति, अति उपसर्गात् व्यध् धातो: णिनि प्रत्यय अथवा अतिक्रम्य अन्येषां लक्ष्यं विध्यतीति अतिव्याधी। **महारथ:** = महान् रथो यस्य स: बहुव्रीहि, महायोद्धा "एकादशसहस्राणि योधयेत् यस्तु धन्विनाम्। शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च स महारथ उच्यते।" **दोग्ध्री** = दुह् + तृच् + ङीप्। **वोढा** = वहतीति, वह् + तृच्। **सप्ति:** = सपति सङ्ग्रामेषु सहसा समवैति। **पुरन्ध्रि:** = पुरं शरीरं रूपादि गुणसमन्वितं दधातीति पुरन्ध्रि:। **जिष्णु:** = जयतीति जिधातो इष्णुच् प्रत्यय:। **रथेष्ठा:** = रथे तिष्ठतीति सप्तम्या अलुक्। **सभेय:** =

सभायां साधुः, सभा + ढ। **युवास्य** = युवा + आ + अस्य। **योगः** = अप्राप्तस्य प्राप्तिः योगः। **क्षेमः** = प्राप्तस्य पालनं रक्षणं वा क्षेमः। **कल्पताम्** = क्लृपि सम्पद्यमाने, प्रार्थनायां लोट्।

काठिन्य निवारण

ब्रह्मन् = हे परमपिता परमेश्वर। **राष्ट्रे** = राष्ट्र में। **ब्रह्मवर्चसी** = वेद-विद्या से प्रकाशित। **ब्राह्मण** = वेदों और ईश्वर को अच्छी तरह जाननेवाले ब्राह्मण। **आजायताम्** = जन्म लें। **इषव्यः** = बाण चलाने में निपुण। **अतिव्याधी** = शत्रुओं को परास्त करनेवाले। **वोढा** = भार उठाने में समर्थ। **अनड्वान्** = बलशाली वृषभ (बैल)। **सप्तिः** = घोड़ा। **पुरन्ध्रिः** = रूप-गुण युक्त स्त्रियाँ। **योषा** = रमणियाँ। **रथेष्ठा** = रथ में बैठनेवाले। **जिष्णुः** = शत्रुओं को जीतनेवाले। **सभेयः** = सभ्य। **निकामे-निकामे** = समय-समय पर। **फलवत्यः** = उत्तम फल देनेवाली। **नः** = हमारे लिये।

अभ्यास-प्रश्न

१. 'माङ्गलिकम्' में किसके लिए प्रार्थना की गई है?
२. 'माङ्गलिकम्' में किसकी रक्षा के लिए प्रार्थना की गई है?
३. हमारे राष्ट्र में कैसा क्षत्रिय उत्पन्न होना चाहिए?
४. हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण कैसे होने चाहिए?
५. यजमान कैसे होने चाहिए?
६. प्रस्तुत 'माङ्गलिकम्' पाठ किस ग्रन्थ से उद्धृत है?
७. ब्राह्मण शब्द का क्या अर्थ है? इस अर्थ का प्रयोग अपने वाक्य में कीजिए।
८. वैदिक साहित्य के अन्तर्गत आनेवाले ग्रन्थ-समुदाय का नामोल्लेख कीजिए।

➡ आन्तरिक मूल्यांकन

'हमारे जीवन में वेद के मन्त्रों का महत्त्व' विषय पर एक भाषण लिखिए।

●